सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 1/2021

दिनांक : 01/01/2021

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

प्रिय साथियों ,

विषय : नव वर्ष–नई चुनौतियां और नई आशाएं

साल 2020 की विदाई और नववर्ष 2021 के आगमन बेला में हम देश, दुनिया के समस्त मेहनतकशों के साथ ही मध्य क्षेत्र के समस्त मेहनतकशों और बीमा कर्मियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं और अभिनंदन प्रेषित करते हैं। नव वर्ष, नई चुनौतियों और नई आशाएं लेकर आता है, विश्वास है कि यह वर्ष विगत वर्ष की विश्व मानवता के समक्ष मौजूद सबसे बड़े संकट कोविड–19 से नव वर्ष में लोगों की रक्षा के लिए नई सुबह लेकर आयेगा।

यूं तो हर बीते साल की समाप्ति के साथ वह बीता साल इतिहास के पन्नों में अपनी तमाम खूबियों और कमियों, उपलब्धियों और त्रासदियों, तमाम घटनाक्रम को समेटे हुए समाहित हो जाता है और नव वर्ष के रूप में उस इतिहास में नई चुनौतियों और नई आशाओं के नव रंगों से नई इबारत का आगाज़ करता है। बीता वर्ष 2020 हमारे ज्ञात इतिहास में निश्चय ही एक खौफनाक अध्याय के रूप में दर्ज होने जा रहा है क्योंकि इसमें विश्व स्तर पर साल 2019 के अंत से लेकर अब तक कोरोना महामारी के विकराल रूप ने लगभग पूरी दुनिया को ही अपने गहरी गिरफ्त में ले रखा है। यह लिखे जाने तक इस महामारी के प्रभावितों की संख्या 8,24,81,446 पहुंच गई है। जिसमें से 18,00,180 लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। 5,85,07,758 लोग इस बीमारी में ठीक हुए हैं जबकि 2,21,73,528 लोग अभी भी इस संक्रमण से पीड़ित हैं। भारत में यह आंकड़ा 1,02,51,594 संक्रमितों का है। इनमें 1,48,503 लोगों की मृत्यु, 98,39,046 लोग स्वस्थ हुए और 2,64,045 लोग अभी भी संक्रमित हैं।

इस महामारी ने पूंजीवादी दुनिया की असलियत और नवउदारवादी नीतियों के तथाकथित मानवीय चेहरों और उसके खोखलेपन को पूरी तरह बेनकाब कर दिया है। मुक्त बाजार के नाम पर सार्वजनिक स्वास्थ्य के खात्मे की अमानवीयता और त्रासदी का भी साक्षी बन गया वर्ष 2020। जो दुनिया में सर्वशक्तिमान होने का दम भरता रहा, वही अमरीकी साम्राज्यवाद, इस त्रासदी से सबसे भयानक रूप से प्रभावित और मौतों का शिकार हुआ हैं। दक्षिणपंथी उभार के इस दौर में अवैज्ञानिक सोच, दक्षिणपंथी रुझान और इस महामारी से निपटने में पिछड़ी सोच प्रदर्शित करने वाले सभी देश और उनके नेता इसकी सर्वाधिक गिरफ्त में रहे। आज भी इसकी वैक्सीन की उपलब्धता के तमाम दावों के बावजूद स्थिति पूरी तरह स्पष्ट नहीं है।

इस महामारी ने पूंजीवाद की हर स्थिति में मुनाफे की वहशी–हवश की वीभत्सता को भी बेपर्दा कर दिया है। महामारी के स्वरूप ने एक अमानवीयता की स्थिति उत्पन्न कर दी। जब दुनिया तालाबंदी, गहरी आर्थिक मंदी और उसके प्रभाव से बहुसंख्यक जनता, जीवन में भारी गिरावट से जूझ रही थी, ठीक उसी वक्त खरबपतियों की पूंजी में इजाफा हो रहा था। इसी दौरान अमेरिका की जनता द्वारा वहां हुए चुनाव में घुर दक्षिणपंथी ट्रंप को पराजित किए जाते हुए पूरे विश्व ने देखा, साथ ही तमाम अमरीकी साम्राज्यवाद के नग्न हथकंडों के बावजूद बोलिविया में वाम की जीत, तमाम कोशिशों के बावजूद वेनेजुएला और लातिन अमरीका में साम्राज्यवाद की साजिशों के खिलाफ वहां की जनता के सतत प्रतिबद्ध संघर्ष का भी साक्षी रहा वर्ष 2020। सबसे बड़ी बात एक व्यवस्था के रूप में पूंजीवाद और समाजवाद के मध्य अंतर के बुनियादी आधार को ही स्पष्टता से साल 2020 ने दुनिया के इतिहास में दर्ज किया। जहां एक ओर इस संकट में भी पूंजीपतियों में लूट और मुनाफे की जिजिप्सा थी तो दूसरी ओर क्यूबा से लेकर वियतनाम न केवल अपनी जनता को इस महामारी से बचाने बेहतरीन उदाहरण पेश किए वरन् विश्व की पीड़ित मानवता को राहत के लिए हाथ बढ़ा रहे थे। हमें विश्वास है कि विश्व की आम जनता इन काली स्याहों से सबक लेकर नये साल में नई सुबह के साथ इन तमाम परिस्थितियों से मुक्ति का मार्ग ढूंढेगी।

जहां तक हमारे देश का प्रश्न है, यह साल 2020 , तमाम उतार–चढ़ावों का वर्ष बनकर हमसे विदा हो रहा है। कोरोना महामारी से निपटने में अपनाये गये अवैज्ञानिक रुख, राजनैतिक हितों के लिए इसकी प्रारंभिक अनदेखी कर, 'नमस्ते ट्रम्प' के आयोजन हों या मप्र में सत्ता परिवर्तन तक इंतजार और फिर चार घंटे की नोटिस पर अचानक

हुई तालाबंदी और उसके बाद देश में सड़कों पर दिखे भयानक मंज़र। इन काली रातों के काले अध्याय के रूप में सरकारी निरंकुशता और सड़कों पर दम तोड़ती मजबूर अवाम का भी साक्षी रहा यह वर्ष। हमारे देश ने भी 1991 के बाद से आई एक के बाद एक सरकारों की अपनाई गई बाजारोन्मुखी, नवउदारवादी नीतियों से देश के स्वास्थ्य क्षेत्र में सब कुछ बाजार के हवाले करने की त्रासदी को भोगा। इस संकट ने सार्वजनिक स्वास्थ्य की आवश्यकता को स्पष्टता से रेखांकित किया। हालात पर जो भी नियंत्रण है वह उसकी ही देन है यह दीवालों पर लिखी वास्तविकता के रूप में उभरकर सामने आई।

यूं तो देश की अर्थव्यवस्था को विगत कई सालों से ही नोटबंदी, जीएसटी और उदार अर्थनीति के नाम पर चलाई जा रही अनर्थनीति ने गहरे संकट के दलदल में धकेला हुआ है किन्तु इसे ऋणात्मक 24 प्रतिशत तक गिरावट में पहुंचकर, चरम बेरोजगारी, 14 करोड़ से अधिक रोजगारशुदा की नौकरी छीनने और अवाम के जीवन में रसातल की भयावहता के रूप में तब्दील होते वक्त को भी वर्ष 2020 ने ही दर्ज किया।

सत्ता की निरंकुशता और जनता की आवाज का दमन, हमारे संविधान के सभी तंत्र और संस्थाओं का स्खलन का भी यह साल गवाह रहा। सीएए, एनपीआर, एनआरसी विरोधी जनमत को दबाने से प्रारंभ हुआ यह सिलसिला शिक्षण संस्थाओं, लोकतांत्रिक अधिकारों, श्रम अधिकारों, हड़ताल के अधिकारों, तमाम जनतांत्रिक संस्थाओं, न्यायिक व्यवस्थाओं पर हमलों से होते हुए किसानों के दिल्ली में जनतांत्रिक रूप से अपना पक्ष या स्वर को अभिव्यक्त करने के संवैधानिक अधिकारों के दमन तक भी पहुंच गया है। इस आपदा के समय आमजनों की सहायता के लिए कदम उठाने की बजाय इस आपदा को अवसर में बदलने के नाम पर देश का सब कुछ केवल कार्पोरेटों, उनमें भी दो मुख्य कार्पोरेटों के हवाले कर देने और उसके लिए संसदीय प्रजातंत्र तक का गला घोंटकर नीतियां थोप देना, फिर चाहे वह श्रम कानून बदलकर श्रम संहिता बनाना हो या कृषि कानून में तब्दीली कर न्यूनतम समर्थन मूल्य, मंडी की व्यवस्था की समाप्ति और आवश्यक वस्तु अधिनियम को समाप्त कर खाद्यान्न वस्तुओं को भी उसकी सूची से बाहर कर कालाबाजारी व जमाखोरी को वैधानिक लूट की इजाजत देने का फैसला या फिर नई शिक्षा नीति को थोप देना या फिर कोयला, रक्षा, बीपीसीएल आदि सार्वजनिक क्षेत्रों के बिक्री का ऐलान या फिर चुनावी रैलियों के लिए कोरोना का प्रतिबंध नहीं, लेकिन कोरोना की आड़ में संसद के शीतकालीन सत्र को रद्द किया जाना, ऐसा चरम अधिनायकवाद 2020 के पहले देश ने शायद देखा नहीं है।

दूसरी ओर 26 नवंबर को 25 करोड़ मजदूरों की इन नीतियों के खिलाफ अभूतपूर्व हड़ताल और उस दिन से ही देश के लाखों किसानों का दिल्ली की सीमाओं पर 42 शहादतों के बाद भी जारी शांतिपूर्ण, अहिंसक, अनिश्चितकालीन आंदोलन, हमारे अन्नदाताओं के खिलाफ तमाम घृणित दुष्प्रचारों के बावजूद निरंतर जारी संग्राम का भी 2020 साक्षी रहा है निश्चय ही 2021 इस संघर्ष में नये सबेरे का आगाज़ करेगा और इससे अहंकार व निरंकुशता के विरुद्ध देश में संविधान और लोकतंत्र के हिफाजत की जड़ें मजबूत होंगी, यह हमारा विश्वास है।

राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग ने उपरोक्त कठिन हालात जिनका जिक्र पूर्व में किया जा चुका है, के दौर में भी बेहतरीन प्रगति कर अद्वितीय प्रदर्शन किया है। सार्वजनिक क्षेत्र के बीमा उद्योग एलआईसी की यह चौतरफा वृद्धि बेमिसाल है। इस स्थिति में उसे सुदृढ़ करने की बजाय इसे निजीकरण के रास्ते में धकेलने, इसे शेयर बाजार में सूचीबद्ध कर आईपीओ जारी करने के मौजूदा निजाम के आक्रमणों का भी यह वर्ष साक्षी रहा। सरकार के इस कदम के खिलाफ एआईआईईए और साथ ही संयुक्त मोर्चा के अन्य घटक यूनियनों के द्वारा इसके विरुद्ध फिर एक बार जबर्दस्त अभियान का भी यह साल साक्षी रहा है। नये वर्ष में हमें इस सबसे बड़ी चुनौती से निपटने और हर कीमत पर इस देश के बीमाधारक और भारत के आमजनों की संपत्ति की हिफाजत के लिए नये संघर्ष की राह पर बढ़ना होगा।

विगत 40 माह से भी अधिक समय से लंबित बीमा कर्मचारियों के वेतन पुनर्निर्धारण पर सतत संघर्षों के बाद 21 दिसंबर को 16 प्रतिशत की वेतन वृद्धि के प्रबंधकीय प्रस्ताव तथा उसमें संयुक्त मोर्चा के घटक संगठनों द्वारा सुधार के साथ ही इसके जल्द निपटारे की मांग पर द्रुतगति से प्रगति सुनिश्चित करने के लिए 2021 में संघर्ष के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

साथियो, बीते साल के इन अनुभवों से सीख लेकर नये साल का स्वागत करते हुए इनमें से हर एक प्रतिगामी कदम के खिलाफ संघर्ष को और मजबूत कर उसे बदलने और जो भी सकारात्मक है, उसे बेहतर करने की शपथ लेकर हम आगे बढ़ेंगे, इसी कामना के साथ आप सभी साथियों, आपके परिजनों, मित्रों और अवाम के प्रत्येक हिस्से को पुनः नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

साहिर ने कहा है –

वह सुबह कभी तो आयेगी...
वह सुबह हमीं से आयेगी...

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ...

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)
महासचिव

●●●